

विचार बिन्दु

मन की प्रसन्नता से समस्त मानसिक और शारीरिक रोग दूर हो जाते हैं। –रामदास

लोकतंत्र से भीड़-तंत्र तक

लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत यह है कि सत्ता में बैठा व्यक्ति स्वयं को देश का मालिक नहीं, बल्कि जनता का सेवक समझे। लोकतंत्र केवल चुनाव कराने और बहुमत प्राप्त करने का नाम नहीं है; इसकी वास्तविक आत्मा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, असहमति का सम्मान, संस्थाओं की निष्पक्षता और सत्ता की जवाबदेही में निहित है। जब शासक स्वयं को राष्ट्र से बड़ा समझने लगे और आलोचना को अपनी प्रतिष्ठा पर हमला मानने लगे, तब लोकतंत्र के पतन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इसका अंतिम परिणाम तानाशाही के विरुद्ध जनक्रोश और कभी-कभी भीड़-तंत्र के रूप में सामने आता है।

लोकतंत्र का अर्थ केवल पाँच वर्ष में एक बार मतदान करना नहीं है। इसमें सरकार को संविधान, कानून और नागरिकों के मौलिक अधिकारों के प्रति जवाबदेह रहना होता है। स्वतंत्र न्यायपालिका, निष्पक्ष चुनाव, उत्तरदायी संसद, स्वतंत्र मीडिया और जागरूक नागरिक इसके प्रमुख स्तंभ हैं। बहुमत को शासन करने का अधिकार अवश्य मिलता है, लेकिन अल्पमत के विचारों और अधिकारों की रक्षा करना भी उतना ही आवश्यक है। चुनाव में बहुमत प्राप्त करना किसी सरकार को मनमाने ढंग से शासन करने का अधिकार नहीं देता।

व्यक्तिपूजा से शुरू होता है पतन

तानाशाही की शुरुआत प्रायः सत्ता के अहंकार से होती है। शासक देश की प्रत्येक उपलब्धि का श्रेय स्वयं लेने लगता है। सरकारी योजनाओं, विकास कार्यों और सार्वजनिक आयोजनों में संस्थाओं की भूमिका पोछे छूट जाती है और व्यक्ति का महिमामंडन प्रमुख हो जाता है। धीरे-धीरे यह धारणा स्थापित करने का प्रयास होता है कि राष्ट्र का भविष्य किसी एक नेता की सत्ता से जुड़ा है।

लोकतंत्र में संवाद और जवाबदेही अनिवार्य हैं। संसद में बहस, पत्रकारों के प्रश्न, विपक्ष की आलोचना और नागरिकों की असहमति शासन को सही दिशा देने के साधन हैं। लेकिन जब शासक कठिन सवालों से बचने लगे, स्वतंत्र पत्रकारिता से दूरी बनाए और केवल एकतरफा संवाद को पर्याप्त समझे, तब लोकतांत्रिक जवाबदेही कमजोर पड़ने लगती है। जनता की बात सुनने के बजाय उसे अपनी उपलब्धियाँ सुनाना शासन की प्राथमिकता बन जाता है।

इससे भी गंभीर स्थिति तब पैदा होती है, जब सरकार को आलोचना को राष्ट्रविरोध से जोड़ दिया जाता है। किसी नीति पर सवाल उठाने वाले पत्रकार, विद्यार्थी, सामाजिक कार्यकर्ता या विपक्षी नेता को देशद्रोही अथवा राष्ट्र का शत्रु बताना स्वस्थ लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। सरकार और राष्ट्र एक नहीं हैं। सरकार की आलोचना करना राष्ट्र का विरोध करना नहीं, बल्कि लोकतंत्र में नागरिक के अधिकार का प्रयोग है।

संस्थाओं का क्षरण और बढ़ता जनक्रोश

लोकतंत्र की मजबूती केवल संविधान में लिखे प्रावधानों पर निर्भर नहीं करती; इसके लिए संस्थाओं की स्वतंत्रता और परंपराओं का सम्मान भी आवश्यक है। यदि संसद में पर्याप्त चर्चा के बिना कानून पारित हों, विपक्ष को अपनी बात रखने का अवसर न मिले और संवैधानिक संस्थाओं की निष्पक्षता पर लगातार प्रश्न उठें, तो जनता का विश्वास कमजोर होने लगता है।

इसी प्रकार, जाँच एजेंसियों के राजनीतिक इस्तेमाल के आरोप, आलोचकों के चरित्र-हनन और सोशल मीडिया पर संगठित टोलिंग्स से असहमति का वातावरण भयपूर्ण हो सकता है। स्वतंत्र मीडिया का दायित्व सत्ता से सवाल पूछना है, न कि केवल सरकारी पक्ष का प्रचार करना। जब मीडिया, संसद और अन्य संस्थाएँ जनभावनाओं को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने में असफल दिखाई देती हैं, तब नागरिकों में व्यवस्था के प्रति निराशा बढ़ती है।

महंगाई, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता और अवसरों की कमी इस निराशा को और गहरा करती है। जब लोगों को लगता है कि उनकी शिकायतें सुनने वाला कोई नहीं है, तो असंतोष धीरे-धीरे आक्रोश में बदल सकता है। यही वह मोड़ है, जहाँ लोकतंत्र की कमजोरियाँ सामाजिक अस्थिरता का कारण बनने लगती हैं।

लोकतंत्र में प्रधानमंत्री का पद केवल शासन करने का अधिकार नहीं, बल्कि जनता के प्रति जवाबदेही का दायित्व भी है। लेकिन एक गंभीर सवाल यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2०14 में

तानाशाही और भीड़-तंत्र दोनों लोकतंत्र के लिए घातक हैं, लेकिन इनके स्वरूप अलग हैं। तानाशाही में सत्ता एक व्यक्ति या छोटे

समूह के हाथों में केंद्रित हो जाती है, जबकि

भीड़-तंत्र में विवेकपूर्ण निर्णय की जगह

अनियंत्रित जनभावनाएँ ले लेती हैं। तानाशाही असहमति को दबाती है; भीड़-

तंत्र असहमति रखने वाले को बोलने का

अवसर ही नहीं देता। तानाशाह कानून को

अपने अधीन करना चाहता है, जबकि उप्र

भीड़ कानून को अपने हाथ में लेने लगती है।

पूछने के मंच सीमित पड़ने लगे, तो शासन और जनता के बीच दूरी बढ़ने का खतरा पैदा होता है। लोकतंत्र में नेता का मूल्यांकन केवल इस आधार पर नहीं होना चाहिए कि उसने जनता को क्या बताया, बल्कि इस आधार पर भी होना चाहिए कि उसने जनता की कितनी सुनी।

तानाशाही से भी खतरनाक भीड़-तंत्र

जब शासक विपक्ष से बात करने की जरूरत ही नहीं समझता, तब संसद केवल रबर स्टैप बन जाती है। कानून बिना बहस के पास होते हैं। असहमति को झुठा साबित करने के लिए पूरी मशीनरी लगा दी जाती है – जाँच एजेंसियों का दुरुपयोग, मीडिया में चरित्र हनन, सोशल मीडिया पर ट्रोल आर्मी द्वारा हमलाइस स्थिति में जनता के पास दो ही रास्ते होते हैं। या तो वह डर कर चुप हो जाए, या वह उकता जाए। और भारत जैसे जीवंत समाज में जनता ज्यादा दिन चुप नहीं रहती। महंगाई, बेरोजगारी, संस्थाओं पर कब्जे का अहसास जब आम घर तक पहुँचता है, तो लोगों का धैर्य टूटता है। यहीं से भीड़-तंत्र का उदय होता है। यह कोई सुनियोजित क्रांति नहीं है। यह निराशा से जन्मा विस्फोट है।

जब नागरिक को लगता है कि अदालत, चुनाव आयोग, मीडिया, संसद – कोई भी उसकी बात नहीं सुन रहा, तो वह सड़क को ही अदालत बना लेता है। भीड़ में न कोई नेता होता है, न कोई एजेंडा, सिर्फ गुस्सा होता है। भीड़ में भावनाएँ एक पर हावी हो सकती हैं। अफवाह, उकसावे और प्रतिशोध की भावना निर्दोष लोगों को भी निशाना बना सकती है।

तानाशाही और भीड़-तंत्र दोनों लोकतंत्र के लिए घातक हैं, लेकिन इनके स्वरूप अलग हैं। तानाशाही में सत्ता एक व्यक्ति या छोटे समूह के हाथों में केंद्रित हो जाती है, जबकि भीड़-तंत्र में विवेकपूर्ण निर्णय की जगह अनियंत्रित जनभावनाएँ ले लेती हैं। तानाशाही असहमति को दबाती है; भीड़-तंत्र असहमति रखने वाले को बोलने का अवसर ही नहीं देता। तानाशाह कानून को अपने अधीन करना चाहता है, जबकि उठा भीड़ कानून को अपने हाथ में लेने लगती है।

यह देखा गया है कि दमन, असमानता और जन-असंतोष व्यापक राजनीतिक परिवर्तन को जन्म दे सकते हैं। लेकिन यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि जनविद्रोह अपने आप स्थायी लोकतांत्रिक व्यवस्था की गारंटी नहीं देता। पुरानी सत्ता के पतन के बाद यदि मजबूत संस्थाएँ, संवैधानिक मर्यादाएँ और जवाबदेह नेतृत्व विकसित न हों, तो आराजकता अथवा नए प्रकार का अधिनायकवाद जन्म ले सकता है।

इसलिए जनता का शांतिपूर्ण विरोध लोकतंत्र का अधिकार है, लेकिन हिंसा, आगजनी और कानून हाथ में लेना समाधान नहीं है। लोकतंत्र में जनशक्ति का उद्देश्य व्यवस्था को सुधारना होना चाहिए, उसे नष्ट करना नहीं।

भारत के लिए चेतावनी और समाधान

आज आवश्यकता है कि सत्ता अपनी जवाबदेही स्वीकार करे, संसद में सार्थक बहस को प्रोत्साहित करे, नियमित प्रेस वार्ताओं के माध्यम से कठिन प्रश्नों का उत्तर दे और विपक्ष को लोकतांत्रिक व्यवस्था का अनिवार्य अंग माने। जाँच एजेंसियों और संवैधानिक संस्थाओं की स्वतंत्रता सुनिश्चित की जाए तथा न्यायिक प्रक्रिया और कानून के शासन का सम्मान हो।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि जनता जनार्दन है, प्रजा नहीं। सत्ता जनता की अमानत है, किसी व्यक्ति को निजी संपत्ति नहीं। लेकिन भीड़ किसी लोकतांत्रिक संस्था का विकल्प भी नहीं हो सकती। भीड़ सत्ता बदल सकती है, पर सुशासन के लिए विवेकशील नागरिक, स्वतंत्र संस्थाएँ और उत्तरदायी नेतृत्व चाहिए।

लोकतंत्र को बचाने का रास्ता न तानाशाही है, न भीड़-तंत्र। इसका रास्ता संवाद, सहिष्णुता, जवाबदेही और संवैधानिक मर्यादाओं से होकर गुजरता है। शासक सुनना सीखें और जनता के सवालों का जवाब दे अन्याथा सत्ता का अहंकार जनक्रोश को जन्म देगा और अनियंत्रित जनक्रोश लोकतंत्र की उपलब्धियों को ही नष्ट कर सकता है।

–अतिथि सम्पादक, प्रोफेसर (डा.) पी. सी. कंठालिया एवं मुख्य वैज्ञानिक महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर



पंडित अनिल शर्मा

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज करवा (करक) चौथ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 8:24 पर होगा। आज दशरथ चतुर्थी, रोहिणी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया- शुभ सूर्योदय से 8:01 तक, चर 1०:47 से 12:1० तक, लाभ-अमृत 12:1० से 2:57 तक, शुभ 4:20 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल- 1:3० से 3:00 तक, सूर्योदय 6:38, सूर्यास्त 5:43

राशिफल

गुरुवार 29 अक्टूबर, 2026

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत–2083, रोहिणी नक्षत्र दिन 11:12 तक, परिध योग रात्रि 12:०6 तक, वव करण दिन 11:39 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:09 से मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-वृष, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज करवा (करक) चौथ व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 8:24 पर होगा। आज दशरथ चतुर्थी, रोहिणी व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया- शुभ सूर्योदय से 8:०1 तक, चर 1०:47 से 12:1० तक, लाभ-अमृत 12:1० से 2:57 तक, शुभ 4:20 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल- 1:3० से 3:00 तक, सूर्योदय 6:38, सूर्यास्त 5:43



मेघ

आर्थिक कार्णों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



तुला

व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्य में विलम्ब हो सकता है। आज बने कार्य बिगड़ सकते हैं। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।



वृष

मानसिक तनाव दूर होगा। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज समय आवश्यक योजनानुसार बनने लगेंगे। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



वृश्चिक

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



मिथुन

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज धन हाथ हो सकती है। आज समय आवश्यक कार्यों में खराब होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।



धनु

स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आज व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



कर्क

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



मकर

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता सुधुमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।



सिंह

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक प्रयासों में वृद्धि सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अच्छा है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।



कुंभ

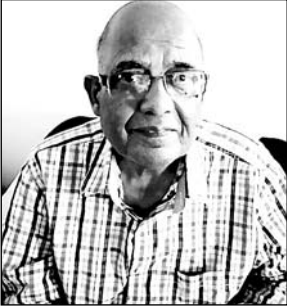
घर-परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।



कन्या

परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का पर्व करवाचौथ



डॉ. जे.के. गर्ग

सनातन धर्मी महिलाएँ कार्तिक कृष्णा दाम्पत्य जीवन की पवित्रता का पर्व करवा चौथ का पर्व अपने जीवन साथी के दीर्घायु स्वस्थ और खुशहाल रहने के लिये व्रत रखकर शाम को चन्द्रमा के दर्शन कर उनको अर्क दे कर छलनी से अपने प्राण प्रिय पति को देख कर अपने पति के हाथों से जल पीकर अपना व्रत खोलती हैं। करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह भारत के जम्मू हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, मध्य प्रदेश और राजस्थान में मनाया जाने वाला पर्व है। यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। यह पर्व सुहागिन स्त्रियाँ मनाती हैं।

यह व्रत सवेंरे सूर्योदय से पहले लगभग 4 बजे से आरंभ होकर रात में चंद्रमा दर्शन के उपरांत संपूर्ण होता है। पति की दीर्घायु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचन्द्र गणेश जी की अर्चना की जाती है। संस्कृत में इसको करक चतुर्थी तेलुगु में अटल तद्दी कहा जाता है।

यह व्रत 12 वर्ष तक अथवा 16 वर्ष तक लगातार प्रति वर्ष किया जाता है। अवाधि पूरी होने के पश्चात इस व्रत का उद्यापन (उपसंहार) किया जाता है। किन्तु जो सुहागिन स्त्रियां आजीवन रखना चाहें वे जीवन भर इस व्रत को कर सकती हैं। इस व्रत के समान सौभाग्यदायक व्रत अन्य कोई दूसरा नहीं है। भारत देश में वैसे तो चौथ माता जी के कई मंदिर स्थित है, लेकिन सबसे प्राचीन एवं सबसे अधिक ख्याति प्राप्त मंदिर राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले के चौथ का बरवाड़ा गाँव में स्थित है। चौथ माता के नाम पर इस गाँव का नाम बरवाड़ा से चौथ का बरवाड़ा पड़ गया। चौथ माता मंदिर की स्थापना महाराजा भीम सिंह चौहान ने की थी।

करवा चौथ के व्रत संबंध में पौराणिक एवं लोक कथाएं :-कहा जाता है कि शंकरजी ने माता पार्वती

राजस्थान की देन है सुहागिनों का पावन त्योहार करवाचौथ



अनं्र सिंह आमेरा

भारतीय संस्कृति और लोक-परंपराओं का फलक अत्यंत व्यापक और आत्मीय रहा है। हमारे पर्व और त्योहार केवल धार्मिक कर्मकांडों तक सीमित न होकर जीवन-मूल्यों, प्रेम, समर्पण और सामाजिक ताने-बाने को सुदृढ़ करने के सशक्त माध्यम रहे हैं। ऐसा ही एक अनुपम और भावपूर्ण पर्व है-करक चतुर्थी यानी करवा चौथा। त्याग, आस्था, समर्पण और अखंड सौभाग्य की कामना

का यह व्रत आज न केवल भारत के कोने-कोने में, बल्कि सात समंदर पार बसे भारतवर्षियों के माध्यम से वैश्विक पहचान बना चुका है। लेकिन कम ही लोग जानते हैं कि दाम्पत्य जीवन की मिठास और अटूट विश्वास से रचे-बसे इस सबसे खूबसूरत लोक-उत्सव की ऐतिहासिक जड़ें राजा-रजवाड़ों, वीरों और त्याग की पावन धरा राजस्थान से जुड़ी हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि राजस्थान की वीर जातियाँ ने हिंदू संस्कृति, सभ्यता और अस्मिता को संभारने तथा समृद्ध करने में महती भूमिका निभाई है। अपनी आन-बान-शान के लिए मर-मिटने वाले राजस्थानी शूरवीरों ने विदेशी आक्रांताओं के खिलाफ कई ऐतिहासिक जंगें लड़ीं, उन्हें रोका और लोहे के चने चबवाए। मध्यकाल के उस लंबे और कठिन संक्रांति काल में जहाँ हज़ारों वीर योद्धाओं ने मातृभूमि के लिए वीरगति पाई, वहीं वीरगंगनाओं ने अपने सत और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए हंसते-

हंसते अग्नि स्नान यानी जौहर कर लिया।परंतु, इस वीरों की भूमि केवल खड्ग और ढाल की गर्जना तक सीमित नहीं थी। सुदूर फैले थार के रीसतान की धवल चांदनी रातों में पनपते और पकते प्रेम तथा त्याग के कई अमर किस्से यहाँ के कण-कण और रेत के धोंरों में बिखरे पड़े हैं। वीरता और अनुरागी प्रेम के इसी अद्भुत संतुलन से करवा चौथ जैसी सुंदर लोक-परंपरा का जन्म हुआ।

करवा चौथ की शुरुआत राजस्थान में किस सटीक तिथि या वर्ष में हुई, यह तय कर पाना कठिन है; किंतु यह निर्विवाद है कि यह बहुत प्राचीन शास्त्रोक्त पर्व नहीं, बल्कि मध्यकाल में उपजा एक सशक्त लोक-त्योहार है। मध्यकाल में जब युद्ध की स्थितियाँ लगातार बनी रहती थीं और पुरुष महीनों तक रणभूमि में अपनी जान धेधेली पर रखकर लड़ते थे, तब घर में बैठी स्त्रियों के मन में अपने सुहाग की सुरक्षा और लंबी उम्र की चिंता स्वाभाविक थी। युद्ध के मैदान से पति के सकुशल और विजयी होकर लौट आने की तीव्र मंशा और प्रार्थना ने ही इस व्रत को जन्म दिया। स्त्रियों के इसी अटूट विश्वास और संकल्प ने धीरे-धीरे इस व्यक्तित्ग प्रार्थना को एक सामूहिक लोक-व्रत के रूप में लोकप्रिय बना दिया।

चौथ का बरवाड़ा: आस्था का आदिकेंद्र और पहला चौथ माता मंदिर -इस महान लोक-परंपरा के उद्गम और केंद्रबिंदु की बात करें तो सवाई माधोपुर जिले का चौथ का बरवाड़ा इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज है। यहाँ अरावली की पहाड़ियों पर स्थित ऐतिहासिक चौथ माता मंदिर संभवतः देश का सबसे पुराना और पहला चौथ माता का मंदिर है। इस दिव्य धाम की स्थापना राजा भीमसिंह चौहान ने करवाई थीचौथ का बरवाड़ा स्थित यह मंदिर सदियों से अखंड सौभाग्य की देवी माता चौथ के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक रहा है। यहाँ से उठी यह पावन परंपरा शनैः-शनैः राजस्थान की सीमाओं को लांघकर मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, पंजाब,

जैसलमेर में कार्तिक स्नान की अनूठी परंपरा, ब्रह्ममुहूर्त में गूंजते हैं लक्ष्मीनाथजी के भक्ति भजन



अचलदास डांगरा

स्वर्णनगरी जैसलमेर में कार्तिक मास का विशेष धार्मिक महत्व है। इस पवित्र महीने में शहर की अनेक महिलाएँ ब्रह्ममुहूर्त में प्रातः चार बजे उठकर स्नान करती हैं और भगवान के दर्शन के लिए दिन की शुरुआत करती हैं। सदियों से चली आ रही इस परंपरा में श्रद्धा, भक्ति, लोक आस्था और जैसलमेर की सांस्कृतिक विरासत का अनुठा संगम देखने को मिलता है। कार्तिक मास की सुबह यहाँ केवल दिन की शुरुआत नहीं, बल्कि ईश्वर के प्रति समर्पण और आध्यात्मिक आनंद का अवसर होती है।

कार्तिक मास में अनेक महिलाएँ प्रातः चार बजे उठकर स्नान की तैयारी करती हैं। वे स्नान के पानी से भरी बाल्टी में थोड़ा गंगाजल मिलाती हैं। स्नान करते समय शरीर पर जल डालने के साथ गंगा मैया का आह्वान करते हुए कहती हैं- आबो गंगा, जल में निवास करो। इस धार्मिक भावना के साथ किया जाने वाला स्नान उनके लिए आस्था और आत्मिक शुद्धि का प्रतीक है। स्नान पश्चात महिलाएँ स्वच्छ वस्त्र धारण कर आराध्य देव भगवान श्री लक्ष्मीनाथजी के मंदिर की ओर प्रस्थान करती हैं।

‘पुजारी आडो खोल, दर्शन करवा दे’ से होती है भक्ति की शुरुआत -प्रातःकाल श्री लक्ष्मीनाथजी मंदिर पहुँचने वाली महिलाओं के लिए मंगला दर्शन का विशेष आकर्षण रहता है। मंदिर में भगवान के दर्शन की प्रतीक्षा के दौरान महिलाएँ मधुर स्वर में मंगला भजन गाती हैं। भजन की मधुर ध्वनि और सुबह के शांत वातावरण में मंदिर का पूरा परिसर भक्तिमय हो उठता है। श्रद्धालुओं को प्रतीक्षा रहती है उस क्षण की, जब भगवान श्री लक्ष्मीनाथजी के पट खुलेंगे और उन्हें अपने आराध्य के मंगला दर्शन होंगे। मंदिर की परंपरा के अनुसार पुजारी स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करने के बाद निज मंदिर में पहुँचता है। करतल ध्वनि के साथ भगवान को जगाने की परंपरा निभाई जाती है। इसके बाद भगवान की चौखट पर धोक लगाकर ताला खोला जाता है और धीरे-धीरे दोनों दरवाजे खोले जाते हैं। भगवान के शयन के समय उपयोग में आने वाले ढोलिये और मिचली को समेटकर उन्हें के निर्धारित स्थान पर रखा जाता है। इसके बाद भगवान को गंगाजल तथा केसर मिश्रित शुद्ध जल से मंगला स्नान करवाया जाता है। स्नान पश्चात भगवान को नए वस्त्र, जिन्हें स्थानीय परंपरा में बागा कहा जाता है, धारण करवाए जाते हैं। फिर स्वर्ण आभूषणों से उनका श्रृंगार किया जाता है और ललाट पर केसर का तिलक लगाया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में मंदिर की प्राचीन धार्मिक परंपराओं और पूजा-विधान की झलक दिखाई देती हैं। जब भगवान के दर्शन होते हैं तो श्रद्धालुओं की भक्ति और आनंद देखते ही बनता है। महिलाएँ इस दौरान भी भजन गाकर वातावरण को भक्तिरस से भर देती हैं।



श्रद्धा को नई अभिव्यक्ति मिल रही है।

भगवान श्री लक्ष्मीनाथजी के मंगला दर्शन करने के बाद कई श्रद्धालु रत्नेश्वर महादेव मंदिर में दर्शन करते हैं। इसके पश्चात घर लौटते समय मार्ग में सूर्य भगवान, रामदेवजी, शंखल माता और परगछाड़ रायजी के दर्शन कर अपनी दिनचर्या आरंभ करते हैं।

श्रद्धालुओं की मान्यता है कि भगवान के दर्शन और भजन-कीर्तन से दिन की शुरुआत करने से मन को शांति, सकारात्मकता और आनंद की अनुभूति होती है। सुबह-सुबह मंदिरों में गूंजते भजन और श्रद्धालुओं की सामूहिक उपस्थिति जैसलमेर की धार्मिक जीवनशैली का सुंदर परिचय देती है।

सदियों से जीवंत है जैसलमेर की यह धार्मिक विरासत-कार्तिक स्नान और भगवान श्री लक्ष्मीनाथजी के मंगला दर्शन की यह परंपरा पीढ़ी-

दर-पीढ़ी चली आ रही है। इन सभी परंपराओं में जैसलमेर की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत समाहित है। आज भी जब स्वर्णनगरी की सुबह होती है, तब अनेक श्रद्धालुओं के दिन का आरंभ भगवान के नाम, भजनों की मधुर ध्वनि और मंदिर के दर्शन से होता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ के बीच यह परंपरा लोगों को अपनी जड़ों, संस्कारों और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़े रखती है। जैसलमेर में कार्तिक मास की यह भक्ति परंपरा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आस्था, अनुशासन, सेवा, सामूहिक सद्भाव और सांस्कृतिक विरासत की ऐसी धरोहर है, जिसकी मधुरता हर सुबह स्वर्णनगरी के वातावरण में अनुभव की जा सकती है।

—अचलदास डांगरा,

वरिष्ठ पत्रकार, जेठा पाड़ा जैसलमेर